

**27** কোথায় “তীক্ষ্ণধার হা হৃতাশকরা মন্তব্য করা হয়েছে”?

>> অফিসে নিখিল যে সংবাদপত্রটি অন্যমনস্কভাবে তুলে নিয়েছিল, তাই এক জায়গায় “তীক্ষ্ণধার হা হৃতাশকরা মন্তব্য করা হয়েছে”।

**28** কেন “তীক্ষ্ণধার হা হৃতাশকরা মন্তব্য করা হয়েছে”?

>> কুড়িটির মতো মৃতদেহের যথাযথ সংকার করে তাদের স্বর্গে পাঠানোর ব্যবস্থা করা হ্যনি বলে সংবাদপত্রের একস্থানে হা-হৃতাশকরা মন্তব্য করা হয়েছিল।

**29** মাইনের দিন মৃত্যুঙ্গয় নিখিলের ওপর কোন্ কাজের দায়িত্ব ন্যস্ত করেছিল?

>> মৃত্যুঙ্গয়ের মাইনের পুরো টাকা কোনো আগ-তহবিলে দান করার দায়িত্ব মৃত্যুঙ্গয় নিখিলকে দিয়েছিল।

**30** মৃত্যুঙ্গয় মাইনের পুরো টাকাটা রিলিফ ফাস্টে দেওয়ার কথা জানালে সেই প্রসঙ্গে তাকে নিখিল কী বলেছিল?

>> নিখিল মৃত্যুঙ্গয়কে বলেছিল যে, পরিবারের ন-জনের ভরণ-পোষণের জন্য এমনিতেই মাইনের টাকায় মৃত্যুঙ্গয় সংসার চালাতে পারে না, প্রতিমাসেই তাকে ধার করতে হয়।

**31** “আমায় কিছু একটা করতে হবে ভাই!”—কী কারণে বস্তা এমন করার তাগিদ অনুভব করেছিল?

>> অনাহার-মৃত্যু দেখার পর দুঃখে এবং অপরাধবোধে দীর্ঘ মৃত্যুঙ্গয়ের অনাহারী মানুষের জন্য কিছু করার তাগিদে রাতে ঘুম হত না এবং খেতে বসলে খেতে পারত না।

**32** “এক বেলা খাওয়া ছেড়ে দিয়েছি!”—বস্তার এ কাজের উদ্দেশ্য কী ছিল?

>> মহস্তরগত লোকদের খাবার বিলিয়ে দেওয়ার উদ্দেশ্যে বস্তা মৃত্যুঙ্গয় সন্ত্বীক এক বেলা খাওয়া ছেড়ে দিয়েছিল।

**33** “এ অন্যায় নয়? অত্যাচার নয়?”—বস্তা কাকে অন্যায় এবং অত্যাচার বলেছে?

>> বস্তা মৃত্যুঙ্গয় জানিয়েছে যে, সে না খেলে তার অসুস্থ স্ত্রী যে অন্য গ্রহণ করে না, তা অন্যায় এবং অত্যাচার।

**34** মৃত্যুঙ্গয় তার স্ত্রী সমন্বে কেন বলেছিল, “মরে তো মরবে না খেয়ে”?

>> মৃত্যুঙ্গয় না খেলে তার অসুস্থ স্ত্রী অন্য গ্রহণ করত না বলে তার আচরণে ক্ষুধ এবং তার স্বাস্থ্যের বিষয়ে উৎকঠায় মৃত্যুঙ্গয় এ কথা বলেছিল।

**35** অনাহার-মৃত্যু দেখার আগে নিজেকে ধিকার দেওয়ার মতো কোন্ কোন্ কাজ করেছিল মৃত্যুঙ্গয়?

>> ভয়ংকর দুর্ভিক্ষ জেনেও চার বেলা পেটপুরে খাওয়া এবং আগকার্যে লোকাভাব থাকলেও সে কাজে অংশ না নিয়ে অবসর কাটানোর চিন্তায় মশগুল হয়েছিল মৃত্যুঙ্গয়।

**36** মাইনের দিন নিখিল মানি অর্ডারের ফর্ম আনিয়ে কী ভাবছিল?

>> নিখিল প্রতিমাসে তিন জায়গায় যে অর্থসাহায্য করে, তিনটি সাহায্য পাঁচ টাকা করে কমিয়ে দেবে কি না— কথাই ভাবছিল নিখিল।

**37** দুর্ভিক্ষের জন্য নিখিল তার জীবনযাত্রার কোন্ প্রতিয়েছিল?

>> দুর্ভিক্ষের জন্য নিখিল তার খাওয়াদাওয়া যতন কাটাঁট করে কমিয়ে দিয়েছিল।

**38** মৃত্যুঙ্গয় নিখিলকে কোন্ কোন্ বিশেষণে ভিজ করেছিল?

>> মৃত্যুঙ্গয় নিখিলকে ‘পাশবিক স্বার্থপর’ এবং ‘বন্ধু’ বলে তিরস্কার করেছিল।

**39** “জীবনধারণের অন্মে মানুষের দাবি” যে জন্মাচ্ছে না, মূল কারণ কী বলে মনে করে নিখিল?

>> ভিজ্ঞা দেওয়ার মতো অস্বাভাবিক পাপ আজও পুণ্য পরিগণিত হয় বলেই “জীবনধারণের অন্মে মানুষের দাবি” জন্মাচ্ছে না বলে মনে করে নিখিল।

**40** নিখিলের মতে কী হলে “অন্ম থাকতে বাংলায় না কেউ মরত না”?

>> অনাহারী মানুষদের এক কাপ অখাদ্য ফ্যান দেওয়ার বল যদি তাদের স্বার্থপর করে তোলা যেত, তবে নিখিলের মন “অন্ম থাকতে বাংলায় না খেয়ে কেউ মরত না”।

**41** “সেদিনের পর থেকে মৃত্যুঙ্গয়ের মুখ বিষণ্ণ গন্তীর হচ্ছে আছে।”—কোন্ দিনের পর থেকে?

>> ফুটপাথে যেদিন মৃত্যুঙ্গয় অনাহারে মৃত্যু দর্শন করেছিল সেদিনের পর থেকেই সে বিষণ্ণ, গন্তীর হয়ে গিয়েছিল।

**42** “তারপর দিন দিন কেমন যেন হয়ে যেতে নাম্মে মৃত্যুঙ্গয়।”—কবে থেকে?

>> অফিসে মাইনের দিনে সহকর্মী নিখিলের সঙ্গে আদর্শগত বিবরণের পর থেকে দিন দিন কেমন যেন হয়ে যেতে লেগেছিল মৃত্যুঙ্গয়।

**43** মাইনের দিনের পর থেকে মৃত্যুঙ্গয়ের পেশাজীবনে পরিবর্তন এল?

>> মাইনের দিনের পর থেকে মৃত্যুঙ্গয় অফিসে দেরি করে আসত এবং নির্দিষ্ট সময়ের আগেই বেরিয়ে যেত, কাতুল করত, আর প্রায়সময়েই অফিসে বসে বসে ভাবত।

**44** অনাহারীরা সারাদিন কোথায় পড়ে থাকত?

>> অনাহারীরা সারাদিন খোলা ফুটপাথে বা বড়ো কোনো গাছের তলায় বা ডাস্টবিনের ধারে পড়ে থাকত।

**45** অনাহারীরা শহরের দোকানপাট বন্ধ হলে রাতে কী করত?

>> আশ্রয়হীন অনাহারীরা অনেক রাতে শহরের দোকানপাট বন্ধ হলে হামাগুড়ি দিয়ে নিকটবর্তী রোয়াকে উঠে আগ্রহ করত।

- 44) अन्यायील जैसे लकड़ी खेत की जगह ?  
 >> अन्यायील जैसे लकड़ी खेत का समर्पण कर अपने लकड़ी का निवास होना चाहिए।
- 45) “दूषित कर दें वह अस्ति है” — निविलके बोधार, जैसे वह वह अस्ति है।
- 46) “जैसे यह धूत बेड़ावे वह मृदुशुद्धि के बातिये लेकर बैठे रखने विलके मृदुशुद्धि के मृदुशुद्धि के बातिये वह वह अस्ति है।
- 47) “जैसे यह निविलक मृदुशुद्धि के जनाम...” — की अनुत्तरी।  
 >> जैसे यह निविलक मृदुशुद्धि के जनाम ये निविल के मृदुशुद्धि के बोल वाले बताए मृदुशुद्धि से जैसे मृदुशुद्धि के मृदुशुद्धि थाके।
- 48) जैसे यह निविलक मृदुशुद्धि के देखाव करने अनुत्तर करने निविल ताके की बासे ?  
 >> जैसे यह अनुत्तर निविल ताके जनाम ये से यहि उत्तरहीनी मृदुशुद्धि हो जैसे उत्तर प्रियांजलि वहि अपने लेकर देखाव करने अपने तरह से मृदुशुद्धि के मृदुशुद्धि थाकरे।
- 49) “ऐ भवनहै ऐ यहाँसे बरापा हरे याहे” — कौन भवनहै ?  
 >> अनंतरीने जल किये कि जल यह न — ऐ भवनहै मृदुशुद्धि के यहाँसे बरापा हरे याहे।
- 50) “कौन एको धरना जयोहे” — कौन कौन् धरना करने का हतोहे ?  
 >> वर्षमर्ह नन करने से अनंतरीने कियुमात भालो करते पारवन — मृदुशुद्धि के एको धरना करने का हतोहे।
- 51) मृदुशुद्धि दृष्टिक्षीटि इन्द्रियोंले गले कथ बले ताने दूसरे अनुभिति केन् केन् वैष्णोंले खोज पाए ?  
 >> मृदुशुद्धि दृष्टिक्षीटि इन्द्रियोंले गले कथ बले ताने दूसरे अनुभिति केन् केन् वैष्णोंले खोज पाए।
- 52) मृदुशुद्धि दृष्टिक्षीटि इन्द्रियोंले गले कथ बले ताने दूसरे अनुभिति केन् केन् वैष्णोंले खोज पाए ?  
 >> मृदुशुद्धि दृष्टिक्षीटि इन्द्रियोंले गले कथ बले ताने दूसरे अनुभिति केन् केन् वैष्णोंले खोज पाए।
- 53) निविल यह आवाजितावे धरने पर मृदुशुद्धि साक्षमतावे की परिवर्तन होयेल ?  
 >> निविलवाली हरे यात्तराव पर मृदुशुद्धिरे निविले तुलि बलावे छोड़ा अपने शोता पाव एवं उत्तरालेरे निविले जाना अनुश हरे से अनुश-पा हरे पाते।

- 54) निविलवाली हरे यात्तराव पर मृदुशुद्धिरे ज्ञानाव की परिवर्तन होयेल ?  
 >> निविलवाली हरे यात्तराव पर यासि पाये धूत बेकामावे बलावे यहि अपने मृदुशुद्धिरे साव पाये अपिति तर ताके यहि एवं तार मृदुशुद्धिरे भावे यावे।
- 55) मृदुशुद्धि अनाहारी मृदुशुद्धिरे गले लेकाम्पो बल करते दियेल ?  
 >> अनाहारी मृदुशुद्धिरे लिंग प्रतिवाहीन एवं ताम्बे यास बर्जन, ताया एवं बालाकलि एवं उत्तराले विविलक इत्तराव मृदुशुद्धि अनाहारी गले लेकाम्पो बल करते दियेल।
- 56) मृदुशुद्धि धूत यह की करते बले जानव निविलके ?  
 >> मृदुशुद्धि धूत यह ये तर यामी मृदुशुद्धिरे गले निविलाये धूत बेड़ाव, ता से निविलके जनाम।
- 57) यादि थेके बेत्रिये बत पर देते मृदुशुद्धिरे धूते उत्तरे हत ?  
 >> यादि थेके बेत्रिये दूप पर देते मृदुशुद्धिरे धूते उत्तरे हत।
- 58) मृदुशुद्धि यादि थेके की की थेये एक्सेल ?  
 >> मृदुशुद्धि यादि थेके थेये एक्सेल ताज, ताज, ताजहाति धूत दै आर भात।
- 59) मृदुशुद्धिरे यन्दिक त्रिया-एटिक्सिया लेक्स लिंग ?  
 >> मृदुशुद्धिरे यन्दिक त्रिया-एटिक्सिया लेक्स लिंग यह लिंगेव लिंग न, शब्दिए एकती उत्तम लिंग तार यासे।
- 60) निविल केन मृदुशुद्धिरे इत्तजे मृदु एकौ अवजार साले जानोउ यासे ?  
 >> मृदुशुद्धिरे यन्दिकतावेरे सालजेरे अटीने ए सालजेरे यह एतिहा आप्स्तावनेरे बहन-ताम्पस बले निविल ताके इत्तजे मृदु एकौ अवजार साले भालोउ यासे।
- 61) “...ए अपामाने प्राप्तिक्षित कि ?” — कौन अपामाने कथ अपाने बला हरेहे ?  
 >> मृदुशुद्धि देते धाम सहेत एकती लोक न योग निविलाये माया योग — ऐ अपामाने कथही एपाने योग हरेहे।
- 62) मृदुशुद्धिरे वातिते बत जन लोक लिंग ?  
 >> मृदुशुद्धिरे वातिते जोन्सार्था यह नहेत।
- 63) “...त्रिलोकनामी अनाहार लिंग न देते माया उत्तीर्ण यह अहै” — उत्तिरि यासे ?  
 >> एयो उत्तीर्ण उत्तिरि यासेरे मृदुशुद्धिरे अविलक यह अहै एयो निविल।

- 66** “ওটা পাশবিক স্বার্থপরতা।”—কোন্ স্বার্থপরতার কথা এখানে বলা হয়েছে ?  
 >> দশজনকে খুন করার চেয়ে নিজেকে না খাইয়ে মারা বলে পাপ—এই দর্শনকে এক ধরনের পাশবিক স্বার্থপরতা বলে মনে করেছে মৃত্যুঞ্জয়।
- 67** “একেবারে মৃত্যু যাজেন দিনকে দিন।”—উক্তিটি কার ?  
 >> ‘কে বাঁচায়, কে বাঁচে’ গর্ভে প্রশ়োধ্যত এই উক্তিটি মৃত্যুঞ্জয়ের স্তুরি।
- 68** “...অজ চোখে পড়ল প্রথম।”—কার চোখে কী প্রথম ধরা পড়ল ?  
 >> ‘কে বাঁচায়, কে বাঁচে’ গর্ভে মৃত্যুঞ্জয়ের চোখে প্রথম ফুটপাথে অনাহারে মৃত্যুর দৃশ্য ধরা পড়ল।
- 69** “কি হল হে তোমার ?”—কে, কাকে এ কথা বলেছিল ?  
 >> ‘কে বাঁচায়, কে বাঁচে’ গর্ভে মৃত্যুঞ্জয়ের বমি করা ও শরীর আরাপ দেখে সহকর্মী নিখিল তাকে এ কথা বলেছিল।
- 70** “শত ধিকু আমাকে।”—কে, কেন নিজেকে ধিক্কার দিয়েছিল ?  
 >> মৃত্যুঞ্জয় নিজেকে ধিক্কার দিয়েছিল কারণ দেশের লোকের অনাহারজনিত মৃত্যুর কথা জেনেশুনেও সে চার বেলা পেটপুরে থেরেছে।
- 71** ‘কে বাঁচায়, কে বাঁচে’ গর্ভের নিখিল সংবাদপত্রে চোখ বুলিয়ে কী দেখতে পেল ?  
 >> সংবাদপত্রে নিখিল দেখল ভালোভাবে সদ্গৃহিত ব্যবস্থা করে গোটা কুড়ি মৃতদেহকে স্বর্গে পাঠানো হয়নি বলে একস্থানে তীক্ষ্ণধার হাতুতাশকরা মন্দব্য করা হয়েছে।
- 72** “একটা কাজ করে দিতে হবে ভাই।”—কে, কাকে, কোন্ কাজের ব্যাপারে অনুরোধ করা হয়েছিল ?  
 >> মৃত্যুঞ্জয় তাদের অফিসের মাইনের দিন নিখিলের হাতে একতাড়া নোট দিয়ে সেগুলি রিলিফ ফাল্ডে জমা দেওয়ার জন্য অনুরোধ করেছিল।  
 ফুটপাথে পড়ে থেকে মৃত্যুঞ্জয় আর দশজন ভিথিরির মতো কী বলে ?  
 >> ফুটপাথে পড়ে থেকে আর দশজন ভিথিরির মতো মৃত্যুঞ্জয় বলে—“গাঁ থেকে এইছি। থেতে পাইনে বাবা। আমায় থেতে দাও !”
- 73** ‘কে বাঁচায়, কে বাঁচে’ গল্পটি প্রথম কোথায় প্রকাশিত হয় ?  
 >> ‘কে বাঁচায়, কে বাঁচে’ গল্পটি প্রথম সারদাকুমার দাস সম্পাদিত ‘ভৈরব’ পত্রিকার প্রথম শারদসংখ্যায় ১৩৫০ বঙ্গাব্দে প্রকাশিত হয়।
- 74** “এতদিন শুধু শুনে আর পড়ে এসেছিল...।”—কার কথা বলা হয়েছে ?  
 >> মানিক বন্দ্যোপাধ্যায়ের ‘কে বাঁচায়, কে বাঁচে’ গর্ভের মৃত্যুঞ্জয় এতদিন ফুটপাথের অনাহার-মৃত্যুর কথাই শুনে আর পড়ে এসেছিল।

- 76** “বাড়ি থেকে বেরিয়ে দু'পা হেঁটেই সে টামে ওঠে,”—কথা বলা হয়েছে সে টাম থেকে কোথায় নামে ?  
 >> মৃত্যুঞ্জয় টাম থেকে নামে অফিসের প্রায় দরজায়।
- 77** “বাড়িটা ও তার শহরের এমন এক নিরিবিলি অঙ্গ মে...।”—এর ফলে তার কী সুবিধা বা অসুবিধা হয়েছিল ?  
 >> ‘কে বাঁচায়, কে বাঁচে’ গর্ভের নায়ক মৃত্যুঞ্জয়-এর বাড়ি শহরের নিরিবিলি এবং ফুটপাথহীন অঙ্গলে হওয়া ইতিপূর্বে ফুটপাথের অনাহার-মৃত্যু তার চোখে পড়েনি।
- 78** “...তখন সে রীতিমতো কাবু হয়ে পড়েছে।”—কে, কোন্ কাবু হয়ে পড়ে ?  
 >> ‘কে বাঁচায়, কে বাঁচে’ গর্ভের নায়ক মৃত্যুঞ্জয় ফুটপাথ একদিন অনাহার-মৃত্যু দেখার পর অফিসে গিয়ে রীতিমতো কাবু হয়ে পড়ে।
- 79** “একটু বসেই তাই উঠে গেল কলঘরে।”—কলঘর যাওয়ার কারণ কী ?  
 >> মৃত্যুঞ্জয় কলঘরে উঠে যায় সকালে-খেয়ে-আসা সময় খাবার বমি করে দেওয়ার জন্য।
- 80** “...নিখিল যখন খবর নিতে এল...।”—তখন মৃত্যুঞ্জয় কী করছিল ?  
 >> নিখিল যখন মৃত্যুঞ্জয়ের খবর নিতে এল তখন মৃত্যুঞ্জয় কলঘর থেকে বমি করে ফিরে কাছের প্লাসে জল খাচ্ছিল।
- 81** “নিখিল যখন খবর নিতে এল...।”—নিখিল কোথা থেকে কার খবর নিতে এসেছিল ?  
 >> নিখিল তাদের অফিসে পাশের কুঠুরি থেকে সহকর্মী-বৃন্দ মৃত্যুঞ্জয়ের খবর নিতে এসেছিল।
- 82** “প্লাসটা খালি করে নামিয়ে রেখে”—মৃত্যুঞ্জয় কী করছিল ?  
 >> প্লাস খালি করে নামিয়ে রেখে মৃত্যুঞ্জয় শূন্য দৃষ্টিতে দেয়ালের দিকে তাকিয়েছিল।
- 83** “হয়তো মৃদু একটু অবজ্ঞার সঙ্গে ভালও বাসে।”—কে কাকে ভালোবাসে ?  
 >> নিখিল মৃত্যুঞ্জয়কে অবজ্ঞার সঙ্গে ভালোবাসে।
- 84** কখন মৃত্যুঞ্জয় নিখিলকে বলেছিল ‘মরে গেল ! না খেয়ে মরে গেল !’ ?  
 >> মৃত্যুঞ্জয়ের অস্বাভাবিক অবস্থা দেখে যখন নিখিল তাকে কী হয়েছে জিজ্ঞাসা করে, তখনই সে কথাগুলি জানায়।
- 85** “ফুটপাথে অনাহারে মৃত্যুর মতো সাধারণ সহজবোধ্য ব্যাপারটা”—ফুটপাথের অনাহারে মৃত্যুকে সাধারণ সহজবোধ্য বলা হয়েছে কেন ?  
 >> পঞ্জশের দশকে মন্দিরের পটভূমিকায় ‘কে বাঁচায়, কে বাঁচে’ গল্পটি রচিত হয়েছে বলেই লেখক ফুটপাথের অনাহার-মৃত্যুর ঘটনাকে সাধারণ, সহজবোধ্য বলেছেন।
- 86** “আনমনে অর্ধ-ভাষণে যেন আর্তনাদ করে উঠল মৃত্যুঞ্জয়।”—আর্তনাদটা কী ছিল ?  
 >> আর্তনাদটা ছিল—“মরে গেল ! না খেয়ে মরে গেল !”

- 98** কেন শুক্রিতে নিখিল ভেবেছিল মে, তিক্ষা দেওয়া 'অঙ্গাভাবিক পাপ'?
- >> তিক্ষা দিয়ে মানুষের ক্ষুধা ও দারিদ্র্যের সমস্যাকে পরিত্রে থেকে মৃত্যুগামী দেওয়ার চেষ্টা করা হয় বলে নিখিল তিক্ষা দেওয়াকে 'অঙ্গাভাবিক পাপ' বলে ভেবেছিল।
- 99** "...কিছু সেটা হয় অনিয়ম!"—কাকে অনিয়ম বলা হয়েছে?
- >> মধ্যমে বা আভাবিক অবস্থায় তিক্ষা দিয়ে বৃচু বাস্তব নিয়মকে উলটে যে মধুর আদ্যাবিক নিয়ম তৈরি করা হয়, তাকেই নিখিল অনিয়ম বলে ভেবেছে।
- 100** "...কিন্তে সাহায্য এবার পাঁচ টাকা করে করিয়ে দেবে..."—কেন সাহায্যের কথা বলা হয়েছে?
- >> নিখিল প্রতি মাসে তিন জায়গায় কিছু কিছু মে অর্থসাহায্য পাঠাত, সেই সাহায্যের কথাই বলা হয়েছে।
- 101** "আমার আর টুনুর মা'র"—টুনুর মা কে?
- >> টুনুর মা হলেন 'কে বাঁচায়, কে বাঁচে' গল্পের নায়ক মৃত্যুগ্নয়ের ঝী।
- 102** "...এ ভাবে দেশের লোককে বাঁচানো যায় না।"—এটা কার ভাবনা?
- >> নিখিল মৃত্যুগ্নকে বুঝিয়ে বলার জন্য একথা ভেবেছিল।
- 103** "...এ ভাবে দেশের লোককে বাঁচানো যায় না।"—কীভাবে?
- >> মৃত্যুগ্ন যে সংক্ষীপ্ত একবেলা খাবার না খেয়ে সেই খাবার দুর্ভিক্ষপীড়িতদের বিলিয়ে দেয়, তা করে দেশের লোককে বাঁচানো যায় না বলে মনে করে নিখিল।
- 104** "এক কাপ অখাদ্য প্রয়োল দেওয়ার বদলে...।"—গুয়েল কী?
- >> জলে সেৰ্ব করা তরল খাদ্য বা ভাতের ফ্যানই হল গুয়েল।
- 105** "এক কাপ অখাদ্য প্রয়োল দেওয়ার বদলে" কী করলে ভালো হত বলে মনে করে নিখিল?
- কোনো দুর্ভিক্ষপীড়িতদের এক কাপ করে প্রয়োল দেওয়ার বদলে তাদের স্বার্থপর করে তুললেই ভালো করা হত তাদের—এমনটা মনে করে নিখিল।
- "সকলে এক কথাই বলে।"—কী কথা বলে?
- দুর্ভিক্ষপীড়িত সকলে অভিযোগহীন এবং প্রতিবাদহীনভাবে বিমানে সুরে তাদের দুর্ভাগ্যের কথা, দুঃখের কাহিনি বলে।
- "খবর দিয়ে বাড়ির সকলে কেউ গভীর, কেউ কান্দ কান্দ মুখ করে বসে থাকে...।"—কাকে, কী খবর দিয়ে বাড়ির সকলে?
- মৃত্যুগ্নয়ের বাড়ির অন্য সবাই মৃত্যুগ্নয়ের ঝীকে জানায় যে, মৃত্যুগ্ন খানিক পরেই আসছে।
- 106** "...তার চোখ দেখেই টের পাওয়া যায়...।"—কী টের পাওয়া যায়?
- >> দুর্ভিক্ষপীড়িত মানুষদের সঙ্গে আজাপ-পরিচয় করা মৃত্যুগ্ন বন্ধ করে দিয়েছে।
- 107** "নিখিলকে বার বার আসছে হয়।"—কেন, কেবলার আসতে হয়?
- >> পথে পথে ঘূরে বেড়ানো বশ্য মৃত্যুগ্নের বাড়ির সোকেনের বীজ্ঞাপনের নিকে তার বশ্য নিখিলকে তাদের বাড়ি বাসবার আসতে হয়।
- 108** "...মৃত্যুগ্নের সুস্থ পরিষেবা অস্থ হয়ে পড়ে।"—মৃত্যুগ্নের অসুস্থতার কারণ কী?
- >> অবিস যাওয়ার পথে একদিন মৃত্যুগ্ন ফুটপাথে অনহার-মৃত্যুর মতো এক বীভৎস দৃশ্য অবস্থার কেবলে ফেলে। সেটাই তার অসুস্থতার কারণ।
- 109** "...তার অভিজ্ঞতার কাছে কথার মার প্র্যাচ অধীন হয়ে গোছে।"—কার কেন্দ্ৰ অভিজ্ঞতার কথা বলা হয়েছে?
- >> মৃত্যুগ্ন যে বেশ কিছুদিন ধৰে শহরের দুর্ভিক্ষপীড়িতদের দুর্বিশ জীবনের অভিজ্ঞতায় থাক্ষ হয়ে চলেছে, তার সেই অভিজ্ঞতার কথাই এখানে বলা হয়েছে।
- 110** "তারপর মৃত্যুগ্নের গা থেকে ধূলিমলিন সিক্কের জমা অদৃশ্য হয়ে যাবু।"—কেন তার এই অবস্থা হয়েছিল?
- >> ফুটপাথে অনহার-মৃত্যু দেখার পর অনহারক্ষিটি মনুষদের সঙ্গে দিন কাটাতে কাটাতে কৃষে তাদের দলভূক্ত হয়ে যাওয়ার মৃত্যুগ্নের গায়ের জামা কুমশ অদৃশ্য হয়ে যায়।
- 111** "সকলে এক কথাই বলে।"—কী কথা বলে?
- >> সকল দুর্ভিক্ষপীড়িতই বলে, গাঁ থেকে এইছি। খেতে পাইনে বাবা। আমার খেতে দাও।
- 112** ফুটপাথবাসী হয়ে যাওয়ার পর মৃত্যুগ্নের চেহারা ও বেশভূষার কী পরিবর্তন হয়েছিল?
- >> ফুটপাথবাসী হয়ে যাওয়ার পর মৃত্যুগ্নের গা থেকে ধূলিমলিন সিক্কের জমা অদৃশ্য হয়ে যায়, সারা গায়ে মাত্রিস্ত পড়ে, মুখ গৌঁফ-দাঢ়িতে ভরে যায়।
- 113** "অথচ নিখিল প্রশ্ন করলে সে জ্বাবে বস্তু অন্য কথা।"—কোন কথা?
- >> মৃত্যুগ্ন বলে যে, সে বেঁচে থাকতে যে লোকটা না থেঁয়ে মরে গেল, তার সেই অপরাধের প্রায়শিক্ষণ কী।
- 114** "এখন সেটা বন্ধ করে দিয়েছে।"—কে, কী বন্ধ করে দিয়েছে?
- >> দুর্ভিক্ষপীড়িত মানুষদের সঙ্গে আজাপ-পরিচয় করা মৃত্যুগ্ন বন্ধ করে দিয়েছে।
- 115** "...তার চোখ দেখেই টের পাওয়া যায়...।"—কী টের পাওয়া যায়?
- >> মৃত্যুগ্ন যে নিখিলের কোনো কথার মানে বুঝাতে পারছে না, তার অভিজ্ঞতার কাছে কথার মারপ্যাচ অর্থহীন হয়ে গেছে—তার চোখ দেখে নিখিল তা টের পেয়েছিল।

- ১ "মহামা পশ্চিমা আমেরিকা আগেই থেকে যেতে সম্মেহ নেই।" কীভাবে মনি ?
- ২ মৃত্যুজ্ঞয়ের পটভূমিতে মৃত্যুজ্ঞয়ের ফুটপাথে অনাহার-মৃত্যুর মশামের গাথা এখানে পলা হয়েছে।
- ৩ মৃত্যুজ্ঞয় অনাহারে মৃত্যু প্রথম দেখেছিল কখন ?
- ৪ অধিদিম বাড়ি থেকে অফিস যাওয়ার পথে মৃত্যুজ্ঞয় প্রথম অনাহারে মৃত্যু দেখেছিল।
- ৫ নিখিলের চোখে অনাহারে মৃত্যু দেখার আগে মৃত্যুজ্ঞয় সেই ব্যাপারে কীভাবে জেনেছিল ?
- ৬ নিখিলের চোখে অনাহারে মৃত্যু দেখার আগে পর্যন্ত মৃত্যুজ্ঞয় শুধু ঘৰানের কাশজ পড়ে আর লোকের মুখে শুনেই সেই ব্যাপারে জেনেছিল।
- ৭ মৃত্যুজ্ঞয়ের বাড়ি কেমন জ্ঞানায় অবস্থিত ছিল ?
- ৮ মৃত্যুজ্ঞয়ের বাড়ি ছিল কলকাতা শহরের এক নিরিবিলি পাহাড়, যেখানে ফুটপাথ বেশি ছিল না।
- ৯ মৃত্যুজ্ঞয় বাড়ি থেকে কীভাবে অফিসে যেত ? ✓
- ১০ মৃত্যুজ্ঞয় বাড়ি থেকে বেরিয়ে দু-পা হেঁটে রাস্তায় গিয়ে ট্রামে উঠত এবং ট্রাম থেকে অফিসের দোরগোড়ায় নামত।
- ১১ 'মনে আঘাত পেলে' মৃত্যুজ্ঞয়ের শরীর-মনে কী হয় ?
- ১২ 'মনে আঘাত পেলে' মৃত্যুজ্ঞয় মনোকটের সঙ্গে শারীরিক কষ্টেও অনুভব করে।
- ১৩ অনাহারে মৃত্যু দেখার দিন অফিসে পৌছে মৃত্যুজ্ঞয় কী করেছিল ?
- ১৪ অনাহারে মৃত্যু দেখে শারীরিক ও মানসিকভাবে বিপর্যস্ত মৃত্যুজ্ঞয় অফিসে পৌছে বাড়ি থেকে থেয়ে আসা খাবারের সমষ্টিটাই বমি করে দেয়।
- ১৫ নিখিল অবসরজীবনটা কীভাবে কাটাতে চেয়েছিল ?
- ১৬ দুই পড়ে এবং নিজস্ব একটা চিনাজগৎ গড়ে তুলে নিখিল তার অবসরজীবনটা কাটাতে চেয়েছিল।
- ১৭ নিখিলের সম্পদস্থ মৃত্যুজ্ঞয় নিখিলের থেকে কত টাকা বেশি মাইনে পায় এবং কেন ? [নমুনা প্রশ্ন]
- ১৮ একটা বাড়তি কর্মভারের জন্য নিখিলের সম্পদস্থ মৃত্যুজ্ঞয় তার থেকে পঞ্চাশ টাকা বেশি মাইনে পায়।
- ১৯ নিখিলের চেহারা এবং প্রকৃতি কেমন ছিল ?
- ২০ বোশা চেহারার পুরুষ নিখিল প্রথর বুর্ধিসম্পন্ন হলেও সে ছিল একটু অলস প্রকৃতির।
- ২১ "সংশারে তার নাকি মন নেই।" — তার মন কীসে ছিল ?
- ২২ নিখিলের মন বইপত্র এবং চিনাজগতের মধ্যেই বিচরণ করত।
- ২৩ মৃত্যুজ্ঞয়ের প্রতি নিখিলের ব্যবহার কেমন ছিল ?
- ২৪ আদর্শবাদী মৃত্যুজ্ঞয়কে মৃদু হিসে এবং মৃদু অবজ্ঞা করলেও নিখিল মৃত্যুজ্ঞয়কে শুধু পছন্দই করত না, ভালোও বাসত।
- ২৫ "মৃত্যুজ্ঞয় দুর্বলচিত্ত ভাবপ্রবণ আদর্শবাদী হলে" কীভাবে সে নিখিলের কাছে 'অবজ্ঞেয়' হত ?
- ২৬ মৃত্যুজ্ঞয় দুর্বলচিত্ত ভাবপ্রবণ আদর্শবাদী হলে দুটো খোঁজ দিয়ে তাকে উন্নাস্ত করলেই তার মনের ভেতরকার সব অস্ত্রকার বেরিয়ে আসত এবং সে অবজ্ঞেয় হয়ে যেত।
- ২৭ "মৃদু দৈর্ঘ্যের সঙ্গেই সে তখন ভাবে যে..." — কখন ভাবে ?
- ২৮ নিখিল মাঝেমাঝেই যখন মৃত্যুজ্ঞয়ের মানসিক শক্তির কাছে কানু হয়ে পড়ে, তখনই সে মৃদু দৈর্ঘ্যের সঙ্গে ভাবে।
- ২৯ "মৃদু দৈর্ঘ্যের সঙ্গেই সে তখন ভাবে যে..." — কী ভাবে ?
- ৩০ মৃদু দৈর্ঘ্যের সঙ্গে তখন নিখিল ভাবে যে, সে যদি নিখিল না হয়ে মৃত্যুজ্ঞয় হত, তাহলে গ্রাহণ হত না।
- ৩১ "মৃত্যুজ্ঞয়ের রকম দেখেই নিখিল অনুমান করতে পারল..." — নিখিল কী অনুমান করতে পারল ?
- ৩২ নিখিল অনুমান করল যে, মৃত্যুজ্ঞয় বড়ো একটা সংকটের মুখোমুখি হয়েছে এবং সেই সংকটের নির্বাপক কঠোরতায় সে শার্শিতে আটকে পড়া মৌমাছির মতো মাথা খুড়ছে।
- ৩৩ "মরে গেল। না খেয়ে মরে গেল !" — এই কথাটা মৃত্যুজ্ঞয় নিখিলকে কীভাবে বলেছিল ?
- ৩৪ প্রশ্নোধ্বনি উত্তিটি মৃত্যুজ্ঞয় অন্যমনস্কভাবে, অস্ফুট বাক্যে আর্তনাদের মতো করে নিখিলকে বলেছিল।
- ৩৫ "আরও কয়েকটি প্রশ্ন করে নিখিলের মনে হল..." — কী মনে হয়েছিল নিখিলের ?
- ৩৬ আরও কয়েকটি প্রশ্ন করে নিখিলের মনে হয়েছিল যে, মৃত্যুজ্ঞয়ের মনের ভেতরটা যেন সে স্পষ্ট দেখতে পাচ্ছে।
- ৩৭ "সেটা আশ্চর্য নয়।" — কোনটা আশ্চর্য নয় ?
- ৩৮ ফুটপাথের অনাহার-মৃত্যুর মতো বিশিষ্টতাহীন এবং সহজবোধ্য ব্যাপারটা যে মৃত্যুজ্ঞয় ধারণায় আনতে পারছে না, নিখিলের কাছে তা আশ্চর্য নয়।
- ৩৯ নিখিল কোন্ কোন্ নেতৃবাচক মনোভাব মৃত্যুজ্ঞয়ের প্রতি মৃদুভাবে পোষণ করে ?
- ৪০ অবজ্ঞা এবং দৈর্ঘ্য—এই দুই নেতৃবাচক মনোভাব নিখিল মৃদুভাবে মৃত্যুজ্ঞয়ের প্রতি পোষণ করে।
- ৪১ 'আদর্শবাদ'-এর বৈশিষ্ট্য সমন্বে 'কে বাঁচায়, কে বাঁচে' গল্পে কী বলা হয়েছে ?
- ৪২ আদর্শবাদ হল মানবসভ্যতার সবচেয়ে পুরোনো এবং সবচেয়ে পচা একটা ঐতিহ্য—এমন কথাই গল্পিতে বলা হয়েছে আদর্শবাদ সমন্বে।
- ৪৩ 'কে বাঁচায়, কে বাঁচে' গল্পে লেখক কীসের সমন্বে বলেছেন যে, তা 'শ্লথ, নিষ্ঠেজ নয়' ?
- ৪৪ মৃত্যুজ্ঞয়ের মানসিক ক্রিয়া-প্রতিক্রিয়া সমন্বে লেখক বলেছেন যে, তা 'শ্লথ, নিষ্ঠেজ নয়'।
- ৪৫ মৃত্যুজ্ঞয়ের মানসিক ক্রিয়া-প্রতিক্রিয়া কেমন নয় বলে মনে করে নিখিল ?
- ৪৬ মৃত্যুজ্ঞয়ের মানসিক ক্রিয়া-প্রতিক্রিয়া শ্লথ বা নিষ্ঠেজ নয় বলে মনে করে নিখিল।
- ৪৭ নিখিল মৃত্যুজ্ঞয়কে পছন্দ করে কেন ?
- ৪৮ মৃত্যুজ্ঞয় আদর্শবাদের কল্পনা-তাপ্তি এক সরলচিত্ত শুবক বলে নিখিল মৃত্যুজ্ঞয়কে পছন্দ করে।